संगीत भास्कर (प्रथम खंड)

Sangeet Bhaskar (Part-I) (Sixth Year)

तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: ४००

शास्त्र- २००, प्रथम प्रश्न-पत्र-१००

द्वितीय प्रश्न-पत्र-१००

क्रियात्मक-१२५

मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न-पत्र (First Paper)-

(१) प्रथम से पंचम वर्ष तक निर्धारित सारे पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन।

(२) उत्तर और दक्षिण भारतीय ताल पद्धति का विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन एवं हिन्दुस्तानी तालों को कर्नाटक ताल पद्धति में लिखनें का अभ्यास। पाश्चात्य ताल पद्धति का विस्तृत अध्ययन।

(३) भारतीय घन वाद्य का वर्गीकरण । अवनद्ध वाद्यों का शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत में उपयोग। पाश्चात्य संगीत में अवनद्ध वाद्य का स्थान।

(४) पाश्चात्य संगीत में ताल और लय का स्थान।

(५) भारतीय संगीत में वाद्यों का वर्गीकरण।

(६) प्रसिद्व तबला वादकों की जीवनी और कला क्षेत्र में उनकी देन।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) तबला अथवा पखावज की उत्पत्ति का इतिहास।

(२) तबला की निर्माण प्रणाली और उसके विभिन्न अंगों के नाम।

(३) भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर पद्धति में निर्धारित तालों के

ठेके और उनकी विभिन्न लयकारी एवं टुकड़ा परण पेशकार इत्यादि लिखनें का अभ्यास।

(४) निर्धारित तालों में नये टुकडे, परण तथा कायदा तैयार करके लिपि बद्ध करनें की क्षमता।

(५) तबले से उत्पन्न सहायक नादों की विशेषता।

(६) तबले का विभिन्न घरानों का इतिहास और उनकी वादन शैली की तुलना।

(७) तबला और पखावज की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन ।

(८) संगीत विषयक निबन्ध लिखनें की क्षमता।

(९) तबला अथवा पखावज के विभिन्न अंगों व दोनों तरफ आघात करने से उत्पन्न होने वाले विभिन्न शब्दों की जानकारी।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित तालों को प्रवीणता से बजानें की क्षमता-
तीवरा, रूद्र, रूपक, एकताल, सूलताल, धमार, आताचारताल, ब्रह्म और फरोदस्त।

(२) निम्नलिखित तालों का ठेका तथा साधारण परण, टुकडा पेशकार और कायदा बजानें का अभ्यास-
बसन्त, मत्ततात, मदन (१२ मात्रा)चूड़ामणि (१७) और शिखर १७ मात्रा।

(३) आड़ा चारताल और पंचम सवारी (१५ मात्राा) ताल में लहरा बजानें का अभ्यास।

(४) ख्याल, ध्रुपद, धमार, ठुमरी, भजन, कत्थक नृत्य और यन्त्र संगीत के साथ संगत करनें का अभ्यास।

(५) पाठ्यक्रम में निर्धारित सब तालों में नया टुकडा परण कायदा पेशकार मुखडा, मोहरा और तिहाई तैयार करके बजाने का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत भास्कर पूर्ण

Sangeet Bhaskar Final (Seventh Year)

तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: ४००

शास्त्र- २००, प्रथम प्रश्न पत्र-१००
(द्वितीय प्रश्न-पत्र- १००)
क्रियात्मक-१२५
मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न-पत्र (First Paper)-

(१) ताल की उत्पति इसके दस प्राण तथा संगीत में ताल की महत्वता का वर्णन करें।

(२) शास्त्रीय संगीत, सरल संगीत और यन्त्र संगीत में जितने प्रकार की लयकारी और वादन शैली प्रयुक्त होती है, उनका विवरण ।

(३) विभिन्न घरानों (तबला अथवा पखावज) वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

(४) पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का **(Staff Natational)** पूरा ज्ञान और भारतीय संगीत में उनकी उपयेागिता।

(५) स्वर और ताल का पूर्ण अध्ययन।

(६) तबला अथवा पखावज की वादन शैली का विकास।

(७) तबला अथवा पखावज वादन शैली की परम्परागत तथा आधुनिक शैली के विषय में ज्ञान।

(८) संगीत शिक्षालय तथा संगीत शिक्षण।

(९) गुरू शिष्य परम्परा का महत्व।

(१०) अवनद्ध वाद्यों में तबला तथा पखावज का स्थान।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) निम्नलिखित तालों को कठिन लयकारी में लिखनें का अभ्यास (तबला पखावज)- कुम्भ, लक्ष्मी, विष्णु और फरोदस्त ।

(२) प्रथम से सप्तम वर्ष तक के पाठ्यक्रम में निर्धारित सब तालों में रेला, टुकड़ा, परण आदि ताल लिपि में **(Notation)** लिखनें का अभ्यास।

(३) चक्करदार परण, कमाली परण, फरमायशी परण, दुपल्ली, तिपल्ली इत्यादि लिखनें का अभ्यास।

(४) पाठ्यक्रम के सारे तालों में जिस किसी मात्रा से मुखडा, बोल और तिहाई लिखनें का अभ्यास।

(५) १५वीं शताब्दी के बाद पंजाब में तबले की स्थिति का वर्णन।

(६) संगीत से संबधित विषयों पर निबन्ध लिखनें की क्षमता।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित तालो को बजानें के विषय में साधारण ज्ञान- कुम्भ, विष्णु, लक्ष्मी, जगदम्बा और ब्रहा।

(२) निम्नलिखित तालों में बजानें की विशेष दक्षता एवं नवहक्का, कमाली, फरमाईशी इत्यादि विभिन्न प्रकार की परण बजानें का अभ्यास-

त्रिताल, झपताल, झूमरा, दीपचन्दी, धमार, सूलताल, एकताल, चारताल, आडचारताल, गजझम्पा और पंजाबी ठेका।

(३) निम्नलिखित तालों में संक्षिप्त विस्तार के साथ वादन- टप्पा, अष्टमंगल।

(४) पश्तों और कब्बाली ताल में संगत की दक्षता।

(५) कंठ और वादन के साथ विशेष प्रवीणता युक्त संगत की क्षमता।

(६) विभिन्न घरानों की वादन शैली के प्रदर्शन का साधारण ज्ञान।

(७) हाथ पर ताली खाली दिखलाकर पाठ्यक्रम में निर्धारित सारी तालों की विभिन्न लयकारी बोलने का अभ्यास।

(८) मंच प्रदर्शन ३० मिनट (षष्टम और सप्तम वर्ष के किसी ताल में)

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।